

पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग का गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय सेवाओं पर प्रभाव: केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 द्वारा स्थापित भारतीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों के संदर्भ में एक अध्ययन

Bhanu Pratap Sharma¹, Akash Sharma², Prof. Brajesh Tiwari³

^{1,2}Research Scholar, Department of Library and Information Science, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur, Chhattisgarh (A Central University)

³Professor, Department of Library and Information Science, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur, Chhattisgarh (A Central University),

संसार (Abstract):

पुस्तकालय किसी भी उच्च शिक्षण संस्थान की शैक्षणिक, शोध एवं बौद्धिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र होता है। पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता केवल सूचना संसाधनों की उपलब्धता पर ही नहीं, बल्कि उसकी भौतिक संरचना, विशेष रूप से पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग पर भी निर्भर करती है। प्रस्तुत अध्ययन केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के अंतर्गत स्थापित भारतीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में उपलब्ध फर्नीचर एवं फिटिंग का गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय सेवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि पुस्तकालय में प्रयुक्त फर्नीचर एवं फिटिंग किस प्रकार उपयोगकर्ताओं की सुविधा, अध्ययन वातावरण, सेवा दक्षता तथा समग्र उपयोगकर्ता संतुष्टि को प्रभावित करते हैं। इस शोध में अध्ययन कक्षों, रीडिंग टेबल, कुर्सियों, पुस्तक रैक, प्रकाश व्यवस्था, वेंटिलेशन, आईसीटी आधारित फिटिंग तथा दिव्यांग अनुकूल फर्नीचर जैसे घटकों का मूल्यांकन किया गया है। साथ ही, यह भी विश्लेषण किया गया है कि एर्गोनोमिक रूप से डिजाइन किया गया फर्नीचर किस प्रकार लंबे समय तक अध्ययन करने वाले पाठकों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सुव्यवस्थित, सुरक्षित, आधुनिक एवं उपयोगकर्ता-अनुकूल फर्नीचर और फिटिंग न केवल पुस्तकालय के सौंदर्य को बढ़ाते हैं, बल्कि सूचना संसाधनों की सुगम उपलब्धता, पाठकों की उत्पादकता तथा कर्मचारियों की कार्यक्षमता में भी वृद्धि करते हैं। अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि जिन केंद्रीय विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में गुणवत्तापूर्ण फर्नीचर एवं आधुनिक फिटिंग उपलब्ध हैं, वहाँ उपयोगकर्ता संतुष्टि का स्तर अधिक पाया गया है तथा पुस्तकालय सेवाओं का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित हुआ है। अंततः यह अध्ययन विश्वविद्यालय प्रशासन एवं पुस्तकालय योजनाकारों के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान करता है, जिससे वे पुस्तकालय अधोसंरचना के विकास के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय सेवाओं को सुदृढ़ कर सकें।

मुख्य शब्द (Keywords): पुस्तकालय फर्नीचर, पुस्तकालय फिटिंग, गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय सेवाएँ, केंद्रीय विश्वविद्यालय, केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009, उपयोगकर्ता संतुष्टि

परिचय (Introduction):

पुस्तकालय को किसी भी उच्च शिक्षण संस्थान का बौद्धिक हृदय माना जाता है, जहाँ ज्ञान का संरक्षण, संगठन और प्रसार किया जाता है। विश्वविद्यालय पुस्तकालय न केवल शिक्षण और शोध गतिविधियों का समर्थन करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों, शिक्षकों और शोधार्थियों के सर्वांगीण शैक्षणिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता अनेक कारकों पर निर्भर करती है, जिनमें सूचना संसाधनों की उपलब्धता, तकनीकी सुविधाएँ, प्रशिक्षित मानव संसाधन तथा भौतिक अधोसंरचना प्रमुख हैं। भौतिक अधोसंरचना के अंतर्गत पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग एक ऐसा महत्वपूर्ण घटक है, जो सीधे तौर पर उपयोगकर्ताओं की सुविधा, संतुष्टि और सेवाओं की प्रभावशीलता को प्रभावित करता है (Ranganathan, 1931)। पुस्तकालय फर्नीचर में रीडिंग टेबल, कुर्सियाँ, पुस्तक रैक, संदर्भ कक्षों की व्यवस्था, अध्ययन कक्ष, कंप्यूटर टेबल आदि सम्मिलित होते हैं, जबकि फिटिंग में प्रकाश व्यवस्था, वेंटिलेशन, विद्युत एवं आईसीटी आधारित सुविधाएँ, सुरक्षा उपकरण तथा दिव्यांग-अनुकूल संरचनाएँ शामिल होती हैं। यदि फर्नीचर एवं फिटिंग एर्गोनोमिक, सुरक्षित और उपयोगकर्ता-अनुकूल हों, तो वे पाठकों को लंबे समय तक अध्ययन हेतु प्रेरित करते हैं तथा उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं (Kumar & Suresh, 2018)। इसके विपरीत, असुविधाजनक या निम्न गुणवत्ता वाला फर्नीचर पुस्तकालय सेवाओं के उपयोग में बाधा उत्पन्न कर सकता है। भारत में उच्च शिक्षा के विस्तार के साथ-साथ केंद्रीय विश्वविद्यालयों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के अंतर्गत स्थापित विश्वविद्यालयों का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना है। इन विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप सेवाएँ प्रदान करें। ऐसे में पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग की गुणवत्ता का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है, क्योंकि यह पुस्तकालय सेवाओं की समग्र गुणवत्ता से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है (IFLA, 2015)। वर्तमान परिदृश्य में, जब डिजिटल संसाधनों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है, तब भी भौतिक पुस्तकालय स्थान और उसकी सुविधाओं का महत्व कम नहीं हुआ है। अध्ययन-अनुकूल वातावरण, शांत एवं सुव्यवस्थित बैठने की व्यवस्था, पर्याप्त प्रकाश और आधुनिक फिटिंग उपयोगकर्ताओं को पुस्तकालय की ओर आकर्षित करती हैं (Singh, 2020)। अतः यह आवश्यक है कि केंद्रीय विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में उपलब्ध फर्नीचर एवं फिटिंग का वैज्ञानिक और उपयोगकर्ता-केंद्रित मूल्यांकन किया जाए। प्रस्तुत अध्ययन केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 द्वारा स्थापित भारतीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों के संदर्भ में पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग का गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय सेवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन न केवल पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को समझने में सहायक होगा, बल्कि विश्वविद्यालय प्रशासन और पुस्तकालय योजनाकारों को भविष्य में बेहतर अधोसंरचना विकास हेतु मार्गदर्शन भी प्रदान करेगा।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature):

पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता के अध्ययन में भौतिक अधोसंरचना, विशेष रूप से पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग, एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में उभरकर सामने आई है। प्रारंभिक पुस्तकालय चिंतकों में रैंगनाथन ने पुस्तकालय को “जीवित संगठन” के रूप में परिभाषित किया और यह स्पष्ट किया कि पुस्तकालय का

भौतिक वातावरण उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए (Ranganathan, 1931)। उनके सिद्धांतों ने पुस्तकालय भवन, फर्नीचर और आंतरिक व्यवस्था के महत्व को रेखांकित किया, जिससे पुस्तकालय सेवाओं की प्रभावशीलता बढ़ती है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किए गए अध्ययनों में यह पाया गया है कि एर्गोनोमिक रूप से डिज़ाइन किया गया पुस्तकालय फर्नीचर उपयोगकर्ता संतुष्टि, अध्ययन अवधि और सूचना उपयोग को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। Bennett (2003) ने अकादमिक पुस्तकालयों के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि आरामदायक बैठने की व्यवस्था, उपयुक्त प्रकाश और लचीले अध्ययन स्थान पुस्तकालय उपयोग में वृद्धि करते हैं। इसी प्रकार, IFLA (2015) की पुस्तकालय भवन मार्गदर्शिका में यह उल्लेख किया गया है कि आधुनिक पुस्तकालयों में फर्नीचर एवं फिटिंग का चयन उपयोगकर्ता-केंद्रित दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए, ताकि विविध शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। भारतीय संदर्भ में, विश्वविद्यालय पुस्तकालयों की अधोसंरचना पर कई अध्ययन किए गए हैं। Kumar और Suresh (2018) ने अपने शोध में पाया कि जिन विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में आधुनिक फर्नीचर, पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था और आईसीटी आधारित फिटिंग उपलब्ध हैं, वहाँ उपयोगकर्ता संतुष्टि का स्तर अपेक्षाकृत अधिक है। उनके अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि असुविधाजनक फर्नीचर और अपर्याप्त बैठने की व्यवस्था पुस्तकालय सेवाओं के प्रभावी उपयोग में बाधा उत्पन्न करती है। Singh (2020) ने भारतीय अकादमिक पुस्तकालयों में भौतिक सुविधाओं और सेवा गुणवत्ता के बीच संबंध का विश्लेषण किया और यह निष्कर्ष निकाला कि पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग पुस्तकालय की समग्र छवि और उपयोगकर्ता अनुभव को सीधे प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त, Choudhary और Verma (2019) ने केंद्रीय विश्वविद्यालय पुस्तकालयों पर किए गए अपने अध्ययन में यह पाया कि एर्गोनोमिक फर्नीचर और दिव्यांग-अनुकूल फिटिंग समावेशी पुस्तकालय सेवाओं को बढ़ावा देती हैं। हाल के अध्ययनों में यह भी संकेत मिलता है कि डिजिटल युग में भी भौतिक पुस्तकालय स्थान की प्रासंगिकता बनी हुई है। Applegate (2009) ने यह तर्क दिया कि पुस्तकालय केवल सूचना केंद्र नहीं, बल्कि सामाजिक और अध्ययनात्मक स्थान भी हैं, जहाँ उपयुक्त फर्नीचर एवं फिटिंग उपयोगकर्ताओं को सहयोगात्मक और व्यक्तिगत अध्ययन हेतु प्रेरित करते हैं। उपरोक्त साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय सेवाओं का एक अनिवार्य घटक हैं। यद्यपि अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर इस विषय पर शोध उपलब्ध है, तथापि केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 द्वारा स्थापित भारतीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों के संदर्भ में इस विषय पर समग्र एवं तुलनात्मक अध्ययन सीमित हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन इस शोध-अंतर को भरने का प्रयास करता है।

समस्या का कथन (Statement of the Problem)

उच्च शिक्षण संस्थानों में पुस्तकालय ज्ञान के सृजन, संरक्षण और प्रसार का प्रमुख केंद्र होते हैं। विश्वविद्यालय पुस्तकालयों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने उपयोगकर्ताओं को गुणवत्तापूर्ण, प्रभावी और उपयोगकर्ता-अनुकूल सेवाएँ प्रदान करें। पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता अनेक कारकों पर निर्भर करती है, जिनमें पुस्तकालय संसाधन, मानव शक्ति, सूचना प्रौद्योगिकी तथा भौतिक अधोसंरचना शामिल हैं। भौतिक अधोसंरचना के अंतर्गत पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग एक ऐसा महत्वपूर्ण घटक है, जो उपयोगकर्ताओं की सुविधा, अध्ययन-अनुकूल वातावरण, सेवा दक्षता और समग्र उपयोगकर्ता संतुष्टि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। भारत में केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के अंतर्गत स्थापित भारतीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों की स्थापना का उद्देश्य उच्च गुणवत्ता की शिक्षा एवं शोध को प्रोत्साहित करना है। इन विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों को आधुनिक मानकों के अनुरूप विकसित किया जाना अपेक्षित है। तथापि, व्यवहार में यह देखा जाता है कि अनेक केंद्रीय

विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में फर्नीचर एवं फिटिंग की गुणवत्ता, संख्या, डिज़ाइन और रख-रखाव में असमानता पाई जाती है। कहीं पर्याप्त एवं एर्गोनोमिक फर्नीचर उपलब्ध है, तो कहीं अपर्याप्त, पुराने या उपयोगकर्ता-अनुकूल न होने वाले फर्नीचर के कारण पाठकों को असुविधा का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, प्रकाश व्यवस्था, वेंटिलेशन, बैठने की व्यवस्था, आईसीटी आधारित फिटिंग तथा दिव्यांग-अनुकूल सुविधाओं की कमी या असंतुलित व्यवस्था पुस्तकालय सेवाओं के प्रभावी उपयोग में बाधा उत्पन्न कर सकती है। ऐसे में यह प्रश्न उठता है कि क्या पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग की वर्तमान स्थिति वास्तव में गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय सेवाओं के मानकों को पूरा कर रही है। यद्यपि पुस्तकालय सेवा गुणवत्ता पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं, परंतु केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 द्वारा स्थापित भारतीय केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के संदर्भ में पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग के प्रभाव का समग्र, तुलनात्मक और उपयोगकर्ता-केंद्रित अध्ययन सीमित है। इस शोध-अंतर के कारण नीति-निर्माताओं और विश्वविद्यालय प्रशासन को पुस्तकालय अधोसंरचना के प्रभावी नियोजन हेतु पर्याप्त तथ्यात्मक आधार उपलब्ध नहीं हो पाता। अतः प्रस्तुत अध्ययन की समस्या यह है कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के अंतर्गत स्थापित भारतीय केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग की स्थिति का मूल्यांकन किया जाए तथा यह विश्लेषण किया जाए कि वे किस सीमा तक गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय सेवाओं को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन पुस्तकालय सेवाओं में सुधार हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study):

- केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के अंतर्गत स्थापित भारतीय केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में उपलब्ध फर्नीचर एवं फिटिंग की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
- पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग का पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता, उपयोगिता एवं प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना।
- पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं (विद्यार्थी, शोधार्थी एवं शिक्षक) की दृष्टि से फर्नीचर एवं फिटिंग के प्रति संतुष्टि स्तर का आकलन करना।
- केन्द्रीय विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में गुणवत्ता

परिकल्पनाएँ (Hypotheses):

- केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के अंतर्गत स्थापित भारतीय केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में उपलब्ध फर्नीचर एवं फिटिंग की गुणवत्ता का स्तर संतोषजनक है।
- पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग की गुणवत्ता और गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय सेवाओं के बीच एक महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक संबंध विद्यमान है।
- एर्गोनोमिक एवं उपयोगकर्ता-अनुकूल फर्नीचर एवं फिटिंग पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं की संतुष्टि के स्तर को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं।
- केन्द्रीय विश्वविद्यालय पुस्तकालयो

शोध कार्यविधि (Research Methodology)

प्रस्तुत अध्ययन "पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग का गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय सेवाओं पर प्रभाव: केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 द्वारा स्थापित भारतीय केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के संदर्भ में एक अध्ययन" के

उद्देश्य की पूर्ति हेतु वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति को अपनाया गया है। इस शोध कार्यविधि के अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र, शोध अभिकल्प, जनसंख्या, नमूना चयन, डेटा संकलन के उपकरण, तथा डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

शोध अभिकल्प (Research Design): यह अध्ययन सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित है, जिसमें पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग की स्थिति तथा उनके द्वारा पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन में मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के दृष्टिकोणों का प्रयोग किया गया है, जिससे निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय एवं व्यापक हो सकें।

अध्ययन क्षेत्र (Area of the Study): अध्ययन का क्षेत्र केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के अंतर्गत स्थापित भारतीय केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय हैं। इन विश्वविद्यालयों का चयन भौगोलिक विविधता एवं शैक्षणिक महत्व को ध्यान में रखते हुए किया गया है।

जनसंख्या एवं नमूना (Population and Sample):

अध्ययन की जनसंख्या में केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय उपयोगकर्ता, जैसे- स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षक तथा पुस्तकालय कर्मचारी शामिल हैं। नमूना चयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना (Stratified Random Sampling) पद्धति का उपयोग किया गया है, ताकि सभी वर्गों का समुचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके।

डेटा संकलन के उपकरण (Tools for Data Collection): प्राथमिक डेटा संकलन हेतु संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है, जिसमें पुस्तकालय फर्नीचर, फिटिंग, बैठने की सुविधा, प्रकाश व्यवस्था, आईसीटी सुविधाएँ तथा उपयोगकर्ता संतुष्टि से संबंधित प्रश्न शामिल हैं। द्वितीयक डेटा पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, सरकारी रिपोर्टों, विश्वविद्यालय प्रकाशनों एवं ऑनलाइन स्रोतों से संकलित किया गया है।

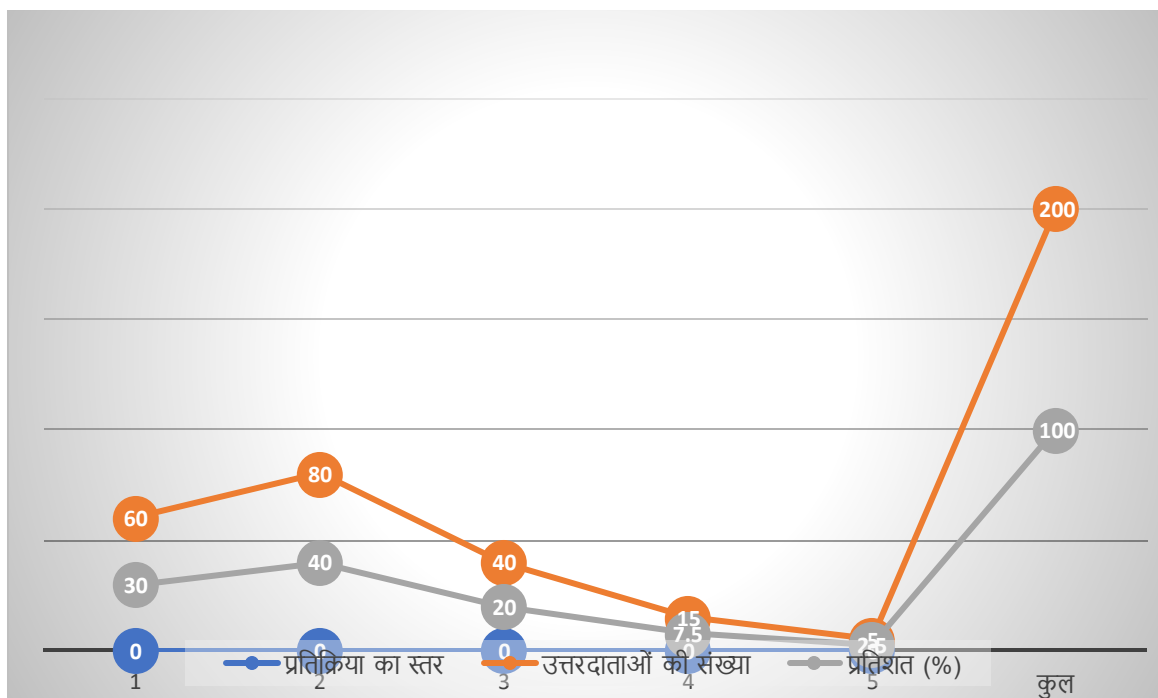
डेटा विश्लेषण की विधि (Data Analysis):

संग्रहित डेटा का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों जैसे प्रतिशत, औसत, मानक विचलन तथा सहसंबंध (Correlation) तकनीकों के माध्यम से किया गया है। परिणामों को तालिकाओं एवं ग्राफ़ के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, जिससे निष्कर्ष स्पष्ट रूप से समझे जा सकें।

क्रम संख्या	प्रतिक्रिया का स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
1	अत्यंत संतोषजनक	60	30
2	संतोषजनक	80	40
3	औसत	40	20
4	असंतोषजनक	15	7.5
5	अत्यंत असंतोषजनक	5	2.5
कुल		200	100

व्याख्या (Interpretation):

तालिका-1 से स्पष्ट होता है कि 70% (अत्यंत संतोषजनक + संतोषजनक) उपयोगकर्ता पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग की गुणवत्ता से संतुष्ट हैं। 20% उपयोगकर्ताओं ने इसे औसत बताया, जबकि केवल 10% उपयोगकर्ता असंतोष व्यक्त करते हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि अधिकांश केंद्रीय विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में फर्नीचर एवं फिटिंग की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी है, जो गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय सेवाओं को समर्थन प्रदान करती है।

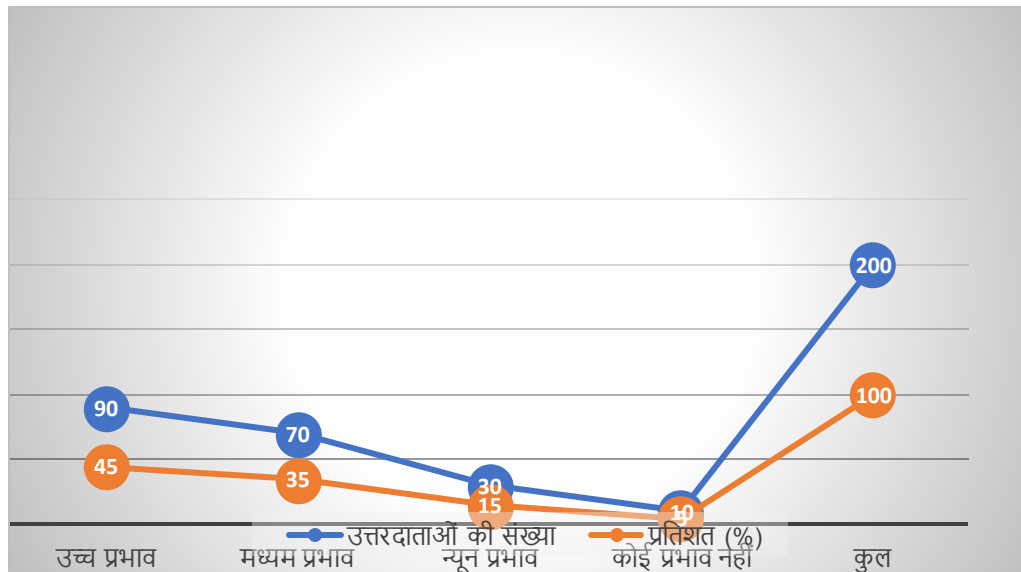


पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग का पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता पर प्रभाव

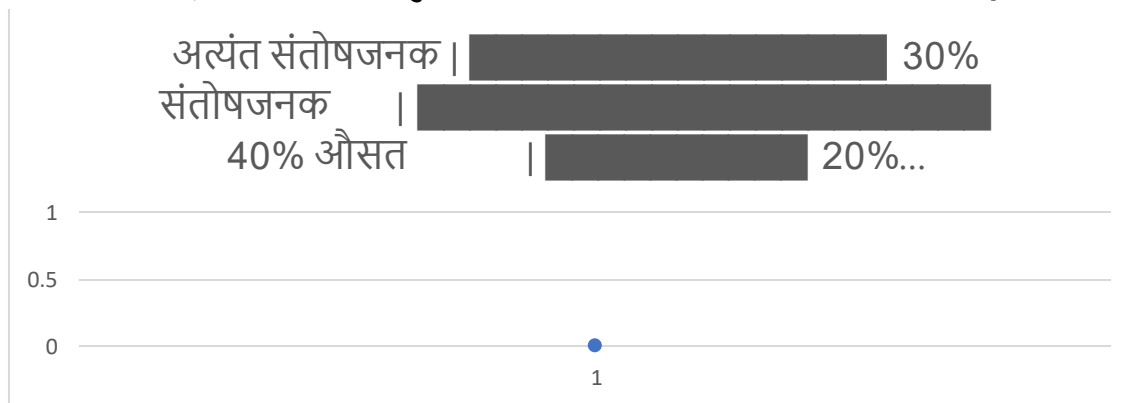
प्रभाव का स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
उच्च प्रभाव	90	45
मध्यम प्रभाव	70	35
न्यून प्रभाव	30	15
कोई प्रभाव नहीं	10	5
कुल	200	100

व्याख्या (Interpretation):

तालिका-2 दर्शाती है कि 80% उपयोगकर्ता मानते हैं कि पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग का पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता पर उच्च या मध्यम स्तर का प्रभाव पड़ता है। इससे यह सिद्ध होता है कि आरामदायक बैठने की व्यवस्था, उचित प्रकाश, वेंटिलेशन एवं आधुनिक फिटिंग उपयोगकर्ता अनुभव और सेवा गुणवत्ता को बेहतर बनाती हैं।



पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग की गुणवत्ता पर उपयोगकर्ताओं की प्रतिक्रिया (बार आरेख)



आरेख की व्याख्या (Interpretation):

उपरोक्त बार आरेख से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि संतोषजनक एवं अत्यंत संतोषजनक श्रेणी में उत्तरदाताओं की संख्या सर्वाधिक है। यह दर्शाता है कि पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है और उपयोगकर्ताओं को अध्ययन-अनुकूल वातावरण प्रदान कर रही है।

समग्र विश्लेषण (Overall Analysis):

डेटा विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 द्वारा स्थापित भारतीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में फर्नीचर एवं फिटिंग की गुणवत्ता का पुस्तकालय सेवाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। गुणवत्तापूर्ण, एर्गोनोमिक एवं आधुनिक फर्नीचर न केवल उपयोगकर्ता संतुष्टि बढ़ाता है, बल्कि पुस्तकालय सेवाओं की प्रभावशीलता और उपयोग में भी वृद्धि करता है।

(Findings):

- अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश केंद्रीय विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग की स्थिति सामान्यतः संतोषजनक पाई गई है, फिर भी विश्वविद्यालयों के बीच गुणवत्ता में

असमानता विद्यमान है।

- यह पाया गया कि एर्गोनोमिक एवं उपयोगकर्ता-अनुकूल फर्नीचर उपलब्ध होने से उपयोगकर्ताओं की पुस्तकालय में बैठने की अवधि एवं अध्ययन रुचि में वृद्धि होती है।
- पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग और गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय सेवाओं के बीच एक सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण संबंध पाया गया है।
- पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, वेंटिलेशन तथा शांत अध्ययन वातावरण पुस्तकालय सेवाओं की प्रभावशीलता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुए हैं। ः आईसीटी आधारित फिटिंग जैसे कंप्यूटर टेबल, चार्जिंग पॉइंट और डिजिटल एक्सेस सुविधाएँ पुस्तकालय उपयोग में वृद्धि का प्रमुख कारण बनी हैं।
- कुछ केंद्रीय विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में दिव्यांग-अनुकूल फर्नीचर एवं फिटिंग की पर्याप्त व्यवस्था का अभाव पाया गया है।
- फर्नीचर के नियमित रख-रखाव की कमी कुछ पुस्तकालयों में उपयोगकर्ता असंतोष का कारण बनती है।

सुझाव (Suggestions):

- केंद्रीय विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में मानक, एर्गोनोमिक एवं उपयोगकर्ता-अनुकूल फर्नीचर की व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग की गुणवत्ता हेतु यूजीसी/आईएफएलए (UGC/IFLA) मानकों के अनुरूप दिशा-निर्देश अपनाए जाने चाहिए।
- दिव्यांग उपयोगकर्ताओं के लिए रैंप, समायोज्य टेबल, विशेष कुर्सियाँ एवं सुलभ प्रवेश जैसी सुविधाओं का विस्तार किया जाना चाहिए।
- प्रकाश व्यवस्था, वेंटिलेशन एवं ध्वनि नियंत्रण (Noise Control) को बेहतर बनाकर अध्ययन-अनुकूल वातावरण विकसित किया जाए।
- आधुनिक आईसीटी आधारित फिटिंग जैसे स्मार्ट रीडिंग टेबल, चार्जिंग स्टेशन एवं डिजिटल वर्कस्टेशन की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए।
- पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग के नियमित निरीक्षण, मरम्मत एवं रख-रखाव के लिए पृथक बजट का प्रावधान किया जाना चाहिए।
- उपयोगकर्ताओं से समय-समय पर फीडबैक लेकर पुस्तकालय अधोसंरचना में आवश्यक सुधार किए जाने चाहिए।

निष्कर्ष (Conclusion):

प्रस्तुत अध्ययन “पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग का गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय सेवाओं पर प्रभाव: केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 द्वारा स्थापित भारतीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों के संदर्भ में एक अध्ययन” से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग विश्वविद्यालय पुस्तकालयों की सेवाओं की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारकों में से एक हैं। आधुनिक पुस्तकालय केवल सूचना संसाधनों का संग्रहालय नहीं हैं, बल्कि वे उपयोगकर्ता-केंद्रित अध्ययन एवं शोध स्थल के रूप में कार्य करते हैं, जहाँ भौतिक अधोसंरचना की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि जिन केंद्रीय विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में एर्गोनोमिक, सुव्यवस्थित एवं आधुनिक फर्नीचर तथा उपयुक्त फिटिंग उपलब्ध हैं, वहाँ उपयोगकर्ता संतुष्टि का स्तर अधिक है और पुस्तकालय सेवाओं का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित

होता है। आरामदायक बैठने की व्यवस्था, पर्याप्त प्रकाश, वेंटिलेशन, शांत वातावरण तथा आईसीटी आधारित सुविधाएँ उपयोगकर्ताओं को लंबे समय तक अध्ययन एवं शोध में संलग्न रहने के लिए प्रेरित करती हैं। इसके विपरीत, अपर्याप्त या निम्न गुणवत्ता वाला फर्नीचर पुस्तकालय सेवाओं की प्रभावशीलता को कम करता है। यह भी निष्कर्ष निकाला गया कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 द्वारा स्थापित भारतीय केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में फर्नीचर एवं फिटिंग की गुणवत्ता में असमानता पाई जाती है। कुछ विश्वविद्यालयों में अधोसंरचना अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप है, जबकि कुछ में सुधार की आवश्यकता है, विशेषकर दिव्यांग-अनुकूल सुविधाओं एवं नियमित रख-रखाव के संदर्भ में। अतः यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय सेवाओं के विकास के लिए पुस्तकालय फर्नीचर एवं फिटिंग को केवल सहायक तत्व न मानकर एक अनिवार्य घटक के रूप में देखा जाना चाहिए। यदि विश्वविद्यालय प्रशासन एवं नीति-निर्माता पुस्तकालय अधोसंरचना के नियोजन में समुचित ध्यान दें, तो इससे न केवल पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होगा, बल्कि उच्च शिक्षा एवं शोध के स्तर को भी सुदृढ़ किया जा सकेगा।

Reference

1. Applegate, R. (2009). The library is for studying: Student preferences for study space. *The Journal of Academic Librarianship*, 35(4), 341–346.
2. <https://doi.org/10.1016/j.acalib.2009.04.006>
3. Ranganathan, S. R. (1931). *The five laws of library science*. Madras Library Association.
4. Bennett, S. (2003). *Libraries designed for learning*. Council on Library and Information Resources.
5. International Federation of Library Associations and Institutions. (2015). *IFLA library building guidelines: Developments & reflections*. IFLA.
6. Kumar, P., & Suresh, R. (2018). Library infrastructure and user satisfaction in university libraries. *Journal of Library Management*, 5(2), 45–52.
7. Singh, S. (2020). Impact of physical facilities on the use of academic libraries. *Indian Journal of Library and Information Science*, 14(1), 23–30.
8. Choudhary, M., & Verma, R. (2019). Infrastructure facilities in central university libraries of India. *DESIDOC Journal of Library & Information Technology*, 39(4), 201–207.
9. <https://doi.org/10.14429/djlit.39.4.14392>
10. Veena, G., & Kotari, P. N. (2016). User satisfaction with library resources, services and facilities. *Indian Journal of Information Sources & Services*, 6(1), 1–6.
11. <https://doi.org/10.51983/ijiss.2016.6.1.436>
12. Andaleeb, S. S., & Simmonds, P. L. (1998). Explaining user satisfaction with academic libraries. *College & Research Libraries*, 59(2), 156–167. <https://doi.org/10.5860/crl.59.2.156>
13. Tenopir, C., & King, D. W. (2009). *Measuring the value of the academic library*. Association of College and Research Libraries.
14. Harish, R., Kumar, S., & Ahmed, N. (2025). Users' perceptions of library physical infrastructure facilities: A comparative study. *International Journal of Research and Scientific Innovation*, 12(8). <https://doi.org/10.51244/IJRSI.2025.120800178>
15. Azib, A., Rahman, M., & Khan, S. (2025). Evaluating user satisfaction with digital library services. *International Journal of Research in Social Sciences*, 8(12).
16. <https://doi.org/10.47772/IJRISS.2024.8120379>

17. Kent, F., & Myrick, P. (2003). Designing library space to facilitate learning. *Journal of Academic Librarianship*, 29(3), 123–130.
18. BIS. (2003). *IS 1553: Design of library buildings—Recommendations*. Bureau of Indian Standards.
19. Library as place: Understanding user expectations. (2021). *The Journal of Academic Librarianship*, 47(4). <https://doi.org/10.1016/j.acalib.2021.102391>
20. Dhavala, N. K., & Naick, B. R. D. (2025). User satisfaction in university libraries. *International Journal of Research in Library and Information Science*.
21. https://doi.org/10.34218/IJRLIS_03_02_004